



युवा जीवन

जुलाई 2023

अपनी शक्ति पर भरोसा न करें, बल्कि पूरी तरह

परमेश्वर पर निर्भर रहो!





निर्भर होना!

प्रस्तावना

प्रिय युवा हृदयों को हार्दिक शुभकामनाएँ!

हमारे जीवन में, जब परीक्षण और अड़चनें हमें घेर लेती हैं और डरा देती हैं, तो हमारा दिल किस पर निर्भर होता है? यह किस पर भरोसा करता है? बाइबिल में, यहूदा के राजा आसा को अपने क्षेत्र के एक दशक बाद एक बड़े युद्ध का सामना करना पड़ा।

जब दो गुना अधिक सैनिक और रथ उसके सामने खड़े हो गए, तो आसा ने एक सुंदर प्रार्थना की, "हे प्रभु, उनकी मदद करना आपके लिए मुश्किल नहीं है, चाहे बहुत से हों या जिनके पास कोई शक्ति नहीं है।" आसा ने अपनी सेनाओं और ताकत पर नहीं, परन्तु परमेश्वर पर और उसकी शक्ति पर भरोसा किया।

चूँकि आसा परमेश्वर पर निर्भर था, परमेश्वर उसके लिए लड़ा। इथियोपियाई सेना उसके सामने से भाग गई। और वे बहुत सारा माल ले आए। चूँकि आसा परमेश्वर पर निर्भर था, उसने आसा और उसके लोगों की रक्षा की, उन्हें जीत और लूट दी, और उनके साथ इतना अच्छा व्यवहार किया कि उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं हुई।

आज भी, कई युवा अपनी शिक्षा, स्थिति और अनुभवों पर निर्भर रहते हैं, और जब ये उन्हें लड़खड़ाहट के बीच में छोड़ देते हैं, तो वे थक जाते हैं। वे काँप जाते हैं। वे स्तब्ध हैं और उठने में असमर्थ हैं।

आज आपकी निर्भरता किस पर है? जब आप प्रभु पर निर्भर रहेंगे तो वह आपको आपके सभी पतनों से ऊपर उठाएगा और हमेशा के लिए विजय के मार्ग पर ले जाएगा।

आसा के दिनों में परमेश्वर ने उसे भूमि को शुद्ध करने और लोगों को सहायता करने के लिए उपयोग किया की वे परमेश्वर पर भरोसा रखें। वह तुम्हें भी उठाएगा और आशीष देगा। लेकिन हर समय परमेश्वर पर निर्भर रहना याद रखें।

हालाँकि शुरू में आसा हर चीज़ के लिए परमेश्वर पर निर्भर था, लेकिन धीरे-धीरे उसकी निर्भरता लोगों की ओर बढ़ती गई। अंत में, अपनी मृत्यु शय्या पर भी उसने परमेश्वर की नहीं, बल्कि चिकित्सक की खोज की।

मेरे प्यारे युवाओं! यदि आप अंत तक परमेश्वर पर निर्भर रहेंगे, तो वह आपको न केवल स्वतंत्रता, सुरक्षा, बल्कि उन्नति और आशीर्वाद भी देगा। वह सुरक्षा और उपहार भी प्रदान करेगा। जब आप अंत तक प्रभु पर निर्भर रहेंगे तो वह आश्चर्यजनक चीज़ें करेगा! कार्य करें! जैसा वह चाहता है!!

मसीह के मिशन में
अविनाश





अप्रैल और मई के महीनों के दौरान, कई भारतीय एक प्रकार के बुखार के आदी हो जाते हैं जिसे आईपीएल बुखार के रूप में जाना जाता है। इस वर्ष प्रचार हर वर्ष की तुलना में थोड़ा अधिक था। इतनी ज्यादा उम्मीद की वजह धोनी के आईपीएल में आखिरी सीजन की संभावना को लेकर थी। जिस टीम ने अभी तक कोई कप नहीं जीता है, उसके प्रशंसकों ने सोशल ट्रेंड शुरू कर दिया है, 'ई साला कप नामदाए'। सोशल मीडिया की इन लड़ाइयों और दिलचस्प मुकाबलों के बीच चेन्नई और गुजरात की टीम फाइनल के लिए क्वालिफाई हो गई। फाइनल मैच बारिश और बूढ़ाबांदी के कारण तीन दिनों तक आयोजित किया गया था। आखिरी गेंद तक कोई भी विजेता की भविष्यवाणी नहीं कर सका। सीएसके टीम के स्टार खिलाड़ियों में से एक, रवींद्र जडेजा अंतिम ओवर के लिए स्ट्राइक पर थे, जब आवश्यक रन 2 गेंदों पर 10 रन थे। अंतिम ओवर की चौथी गेंद तक गुजरात टीम के गेंदबाज मोहित शर्मा ने अच्छी गेंदबाजी की और सिर्फ 3 रन दिए। कई लोगों को लगा कि ट्रॉफी गुजरात जीतेगा।



आखिरी दो गेंदों पर जडेजा स्ट्राइक पर थे। इस स्थिति में जडेजा की मानसिक स्थिति की कल्पना करें। यदि वह जीतता है तो हर कोई उसकी प्रशंसा करेगा लेकिन यदि वह असफल होता है तो उसे कड़ी आलोचनाओं का सामना करना पड़ता है। लेकिन इन सबके बीच वह दबाव में शांत रहे और अगली दो गेंदों पर छक्का और चार रन बनाकर सीएसके को मैच जिता दिया, जिससे वह पांचवीं बार आईपीएल ट्रॉफी जीतने में सफल रहे।

प्रिय युवाओं! जैसा कि हम समाचारों में देखते हैं, युवा पीढ़ी पढ़ाई में असफल होने, अपनी पसंदीदा चीज़ न खरीद पाने या माता-पिता से डांट खाने जैसी छोटी-छोटी वजहों से अपना जीवन समाप्त कर लेते हैं। यह दर्शाता है कि वे स्थिति या चुनौतियों का बहादुरी से सामना करने में सक्षम नहीं हैं। बाइबिल में, दाऊद विश्वास के साथ कहता है कि, "“ तेरे द्वारा मैं एक सेना के विरुद्ध लड़ सकता हूँ; अपने परमेश्वर के द्वारा, मैं शहरपनाह पर छलांग लगा सकता हूँ।” (2 शमूएल 22:30)। क्योंकि यही था उसके साथ था और हर चीज़ में उसने उसे विजय दिलाई थी।

वही परमेश्वर जो जीत के माध्यम से दाऊद का मार्गदर्शन करता था वह आपकी विफलता को सफलता में बदलने के लिए आपके साथ है। जब तुम अपने चालचलन और जीवन को परमेश्वर को सौंपोगे, तो वह उसे पूरा करेगा। वह आपको हर चीज़ पर विजय पाने के लिए साहस और विश्वास देगा, “जो मुझे सामर्थ्य देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूँ” (फिलिप्पियों 4:13)





प्रमुख का मार्ग...

जब बच्चे को जन्म के दूसरे दिन दफनाने के लिए ले जाया गया तो परमेश्वर ने उसके प्राण वापस दे दिये और आज भी, उसे कई लोगों के लिए एक जीवित गवाह के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। आइए सुनते हैं इस युवा भाई वॉटसन विजय के जीवन में हुए दिलचस्प अनुभव के बारे में।

कालेब: जय मसीह की, भाई!

विजय: जय मसीह की, अन्ना।

कालेब: मैंने सुना है कि आपका जन्म एक चमत्कारी जन्म था। क्या आप मुझे इसके बारे में थोड़ा बता सकते हैं?

विजय: हाँ भाई... मेरे जन्म के दूसरे दिन, मैं बहुत अस्वस्थ था, इसलिए उन्होंने मुझे इनक्यूबेटर में रखा। हालाँकि, मेरी साँसें रुक गईं और डॉक्टर ने मेरे माता-पिता को बताया कि मेरी मृत्यु हो गई है। हमारे गाँव तक पहुँचने के लिए, जो लगभग 60 किलोमीटर दूर है, उन्हें मुझे एक टोकरी में ले जाना पड़ा और कुछ खेतों से होकर गुजरना पड़ा। इसलिए, मेरे दादा-दादी ने मुझे एक कपड़े में लपेट दिया और यह सोचकर एक थैले में रख लिया कि वे मुझे किसी भी नदी में फेंक सकते हैं।

कालेब: यह सचमुच भयानक लगता है! क्या उन्होंने तुम्हें छोड़ दिया?

विजय: नहीं, भाई, मुझे समझाने दो... चूँकि उन्हें लंबी दूरी तय करनी थी, इसलिए मेरे दादाजी ने चाय पीने और आगे बढ़ने का फैसला किया। जब दादा-दादी ने चाय पी रहे थे तब बैग हिलने लगा। यह देखकर दुकानदार घबरा गया। जब उसने पूछा कि बैग में

क्या है, तो मेरे दादा और दादी ने बैग खोला और पाया कि मैं सांस ले रहा था। वे मुझे बताते हैं, उन्होंने तुरंत मुझे उस दुकान से चाय लाकर पिलाया।

कालेब: वाह, यह तो चमत्कार है...! खैर, हमने आपके परिवार के बारे में कुछ भी बात नहीं की है, मुझे अपने परिवार के बारे में बताएं...

विजय: मेरे पिता पांडिचेरी से हैं, और मेरी माँ तिरुवल्लुवर जिले के एक गांव पेरियापालायम से हैं। मेरा जन्म और पालन-पोषण उसी गाँव में हुआ। अब भी, मैं पेरियापालायम में रहता हूँ। मैं अपने परिवार में दूसरा बच्चा हूँ। मेरा एक बड़ा भाई और एक छोटी बहन है। मेरे पिता एक मसीही हैं, जबकि मेरी माँ एक ऐसे परिवार से हैं जो यीशु से अपरिचित है। लेकिन वह पिताजी

से कहीं अधिक प्रार्थना करती है। वह हर दिन बाइबल पढ़ती है। जब मैं छोटा था, तो वह मुझे बाइबल से कहानियाँ पढ़ाती थी और मुझे समझाती थी।

कालेब: तो, छोटी उम्र में, आपने बाइबल सीखी और समझी और परमेश्वर के साथ आपका अच्छा रिश्ता बन गया, है ना?

विजय: नहीं भाई...मैं तो सिर्फ मसीही होने का दावा करता था। परमेश्वर के साथ मेरी कोई एकता या जुड़ाव नहीं था, इसलिए मैंने



प्रमुख का मार्ग था।
मैं हमेशा
10-15 लोगों से
घिरा रहता

उसके साथ समय नहीं बिताया। लेकिन मुझे बाइबल का अध्ययन करने की इच्छा थी। मैं बाइबल में लिखी बातें सीखना चाहता था। जब मैं पास्टर को काना में शादी, जकड़ई, मूसा, दाऊद और बाइबिल के बारे में चर्च में बात करते हुए सुनता हूँ, तो मुझे बाइबिल पढ़ने की इच्छा होती है।



क्योंकि यह मेरे लिए सही नहीं होगा। भले ही मैं वहाँ से बाहर आ गया, लेकिन उन्होंने जो भविष्यसूचक शब्द कहे थे, वे मेरे भीतर गूँजते रहे। उसके बाद, वे शब्द अक्सर मुझसे बात करते प्रतीत होते थे। फिर भी, मैं उन शब्दों को अस्वीकार करता रहा। मैंने अपनी 12वीं कक्षा पूरी कर ली।

कालेब: ठीक है...तुम्हें बाइबल पढ़ने की इच्छा थी। क्या आपने इसे पढ़ना शुरू कर दिया?

विजय: हाँ भाई...मैंने तीसरी कक्षा से बाइबल पढ़ना शुरू किया। जब मैं पाँचवीं कक्षा में था, मेरी माँ ने मेरे लिए एक बाइबल खरीदी। तभी से, मैं बाइबल पढ़ने लगा। हालाँकि मैंने बाइबल पढ़ी, फिर भी मैंने सच्चे परमेश्वर से बिना किसी संबंध के जीवन जीया।

कालेब: तो, जब आप बाइबल पढ़ रहे हों... तो कहीं न कहीं आपके जीवन में बड़ा बदलाव आना चाहिए...

विजय: आप जो कह रहे हैं वह सही है, भाई... एक प्रसिद्ध कहावत है जिसमें कहा गया है, कुछ लोग एक ही समय में दो ईश्वरों की सेवा करते हुए एक उतार-चढ़ाव भरा जीवन जीते हैं। ऐसी ही मेरी जिंदगी थी। हर किसी की तरह मुझे भी पापपूर्ण अनुभव हुए। मैं चर्च गया। जब सब लोग आँखें बंद करके प्रार्थना करते थे, तो मैं चुपके से अपनी बाइबल अपनी माँ के पास रख देता था और क्रिकेट खेलने चला जाता था। बहुत-सी पापमय बातें मेरे भीतर रह गईं। मैं नौवीं कक्षा तक ऐसा ही था जब मेरा जीवन बदल गया।

कालेब: ठीक है, तो आपने वास्तव में यीशु के बारे में कब जानना शुरू किया?

विजय: जब मैं 10वीं कक्षा में पढ़ता था तो मेरे चाचा के बेटों को आध्यात्मिक जीवन में आगे बढ़ने का अनुभव हुआ। परमेश्वर ने उन्हें भविष्यवाणी का वरदान दिया था। एक बार जब मैं टीवी पर क्रिकेट देखने के लिए उनके घर गया, तो वहाँ 10 बहनें इकट्ठी थीं और प्रार्थना कर रही थीं। मुझे जबरदस्ती प्रार्थना में बैठाया गया और मैंने उन्हें आत्मा से भरी हुई भाषा में बात करते देखा। तब मुझे कुछ समझ नहीं आया।



जब एक बहन ने मेरे सिर पर हाथ रखकर प्रार्थना की, “प्रभु तुम्हें अपना सेवक बना रहे हैं। प्रभु कहते हैं कि ईश्वर तुम्हें चाहते हैं।” “मैंने सोचा, ‘मैं आधे घंटे के लिए भी चर्च में नहीं रहता, क्या ईश्वर मुझे अपना सेवक बनाएंगे? मैं वहाँ से निकल आया

कालेब: ठीक है। क्या तब से आपका जीवन बदल गया? क्या आपने पढ़ाई जारी रखी?

विजय: 12वीं कक्षा पूरी करने के बाद, मैं चेन्नई के एक कॉलेज में आईटीआई की पढ़ाई करने के लिए घर आ गया। मैं जिस बस मार्ग पर यात्रा करता था उसका “मार्ग का शीर्ष” था। मैं हमेशा 10-15 लोगों से घिरा रहता। मैं एक दुष्ट की तरह था। आज भी विजय नाम को हर कोई जानता है, खासकर उन मार्गों के ड्राइवर। मुझे बहुत मजा आता था। और जब कोई मुझसे यह पूछकर दोष देता कि क्या मैं बच्चा हूँ, तो मैं उनसे कहता, “क्या आपके बच्चे का पालन-पोषण उचित तरीके से होगा? क्या आप मुझे सुधारने आए हैं क्योंकि आप नहीं जानते कि अपने बच्चे का पालन-पोषण कैसे करें?” मैं उन पर पलटवार करता। इस तरह मैं हर दिन बड़ी गुंडागर्दी कर रहा था। मैं ऐसा दुष्ट जीवन जी रहा था।

कालेब: ठीक है... मार्ग का शीर्ष बनने से आपका जीवन कैसे बदल गया? आप यीशु के मार्ग पर कैसे बदल गए?

विजय: आईटीआई की पढ़ाई के दौरान मैं 13 दिनों तक बहुत कमजोर हो गया और बिस्तर पर पड़ा रहा। मैं बिल्कुल भी खाना नहीं खा सका। सभी परीक्षण परिणाम सामान्य थे। लेकिन बुखार कभी कम नहीं हुआ। मैं केवल तरल भोजन ही खा सकता था। अन्यथा, कुछ भी खाना संभव नहीं था। जब मैं बिस्तर पर था, मैंने कुछ सुना, ऐसा लगा जैसे कोई मुझसे बात कर रहा हो। आवाज ने कहा,

“पास्टर जेबाकुमार के चर्च में जाओ।” मुझे नहीं पता था कि वह कहाँ है।

लेकिन किसी तरह, मैंने खोजा और पता लगाया और चर्च गया। जब मैं वहाँ गया, तो वो भविष्यवाणी जो बहन ने पहले ही कही थी वही भविष्यवाणी पास्टर ने भी की,

“प्रभु ने तुम्हें दाऊद की तरह चुना है। प्रभु ने तुझे अपने लोगों को छुड़ाने के लिए चुना है”, मैं

आत्मा से भर गया और मेरी जानकारी के बिना अन्य भाषाओं में बोलना शुरू कर दिया है। लेकिन मैंने अपने भीतर एक आवाज़ सुनी

जो कह रही थी, “यह आत्मा नहीं है, यह आप स्वयं बोल रहे हैं।”

जब मुझे संदेह हुआ कि क्या ईश्वर ने ही मेरा अभिषेक किया है, तो पास्टर ने पूछा, “क्या तुम्हें लगता है कि ईश्वर ने तुम्हारा अभिषेक किया है?” मैंने बिना कुछ सोचे कहा “हाँ! परमेश्वर ने मेरा अभिषेक किया है” और उस दिन से पवित्र आत्मा मुझसे बात करने लगी।



कालेब: सुपर... क्या आपने पवित्र आत्मा के अनुरूप रहना शुरू कर दिया? अब आपको कैसा लगता है कि पवित्र आत्मा आपकी अगुवाई कर रहा है?

विजय: परमेश्वर मुझे हर दिन सिखा रहे हैं कि उनके साथ पवित्र तरीके से कैसे रहना है और उनके साथ कैसे जुड़ना है। अभिषेक प्राप्त करने के बाद मैंने अपने पाप नहीं छोड़े। मैंने अपने पापों को अपने से दूर होते देखना शुरू कर दिया। अभिषेक प्राप्त करने के बाद, मेरे मित्रों का चक्र पूरी तरह से बदल गया। मेरा जीवन, जो हमेशा क्रिकेट के मैदान के बारे में था, अब मेरे कॉलेज, घर और चर्च में बदल गया है।

दिन में 4 से 5 घंटे, मैंने परमेश्वर के साथ समय बिताना शुरू कर दिया, और मैंने सबसे पहले परमेश्वर को प्राथमिकता देना शुरू कर दिया। वह मुझे प्रार्थना की भावना से भर रहा था और मुझे राष्ट्र के लिए प्रार्थना करने और परमेश्वर की आराधना करने के लिए हट बना रहा है। जैसे-जैसे मैं प्रभु के करीब आया, पाप मुझसे दूर हो गया और पवित्र आत्मा ने मुझे प्रभु के साथ अधिक समय बिताने की शक्ति दी।

कालेब: ठीक है...जैसे-जैसे आप प्रभु के साथ अपने रिश्ते में आगे बढ़ना शुरू करते हैं, आप प्रभु के लिए क्या कर रहे हैं?

विजय: यद्यपि मैं प्रभु में प्रार्थना करने और वचन पढ़ने के लिए बढ़ा, मुझे सुसमाचार साझा करने की बहुत इच्छा थी। लेकिन मुझे नहीं पता था कि यह कैसे करना है। जब मैंने प्रभु से प्रार्थना की, तो प्रभु ने कहा, “मेरे लिए सेवा करने से पहले, मेरी सेवा करो।” मुझे यह समझ में नहीं आया। जब मैंने प्रभु से कहा कि मैं इसे समझ नहीं पाया, तो उन्होंने कहा कि अगर मैं उनके लिए सेवा करता हूँ, तो मुझे बाहर जाना होगा और सभी को बताना होगा कि यीशु उद्धारकर्ता हैं और यीशु सभी से प्यार



करते हैं। उन्होंने मुझे समझाया कि उनके चरणों में प्रतीक्षा करना, उनके साथ समय बिताना और उनके वचनों का पालन करना और प्रार्थना करना उनकी सेवा करना है। 7 वर्षों तक मेरा आध्यात्मिक जीवन इसी तरह चल रहा था। इसके बाद ही मुझे सुसमाचार का प्रचार करने का अवसर मिला। चेन्नई इंग्लैंड के माध्यम से, मैं हर हफ्ते चेन्नई के मरीना बीच पर जाता था और

परमेश्वर के बारे में ट्रेक्ट साझा करके सुसमाचार साझा करना शुरू कर देता था। अब, मैं हर हफ्ते वह सेवा कर रहा हूँ। इतना ही नहीं, परमेश्वर मुझे चेन्नई में इंग्लैंड फेलोशिप का हिस्सा बनने और आध्यात्मिक जीवन में और अधिक बढ़ने और प्रार्थनाओं का संचालन करने के लिए भी कृपा कर रहे हैं।

कालेब: ठीक है विजय... आपने हमारे साथ अपने जीवन में अब तक हुई हर एक बात साझा की है... आप उन युवाओं से क्या कहना चाहते हैं जो युवा विश्व पत्रिका के पाठक हैं?

विजय: दुनिया बहुत व्यस्त है! इन दिनों जब दुनिया बहुत कठोरता से चल रही है, हमें अपना समय बर्बाद किए बिना या सांसारिक मामलों पर अपना समय बर्बाद किए बिना, प्रभु की उपस्थिति में इंतजार करना चाहिए। जैसे ही हम उसकी उपस्थिति में जायेंगे, प्रभु बात नहीं करेगा। वह हमसे केवल तभी बात नहीं करेगा जब हम उसकी उपस्थिति में कई दिनों और घंटों तक प्रतीक्षा करेंगे। इसलिए, जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में प्रतीक्षा करते हैं और प्रभु के वचन के अनुसार कार्य करते हैं, तो पवित्र आत्मा हर दिन हमारा मार्गदर्शन करेगी।

प्रिय युवाओं! यदि यीशु उस लड़के वॉटसन विजय को जीवन दे सकते हैं जो अपने जन्म के दूसरे दिन मर गया था, तो उसे बुलाया जो किशोरावस्था में दुनिया और उसके दोस्तों के पीछे था और कहता था, “मुझे तुम्हारी

ज़रूरत है”, उसका अभिषेक किया और उसका उपयोग किया। आज आप चाहे कोई भी स्थिति हो, यीशु आपके पापों को धो सकते हैं, पवित्र कर सकते हैं और आपका उपयोग भी कर सकते हैं। लेकिन केवल तभी जब आप अपने आप को पूरी तरह से यीशु को सौंप देते हैं

तो आप उसकी भलाई के अनुसार उपयोग किए जा सकते हैं!Δ

मकिदुनिया

प्रिय युवाओं! हर महीने आपको "बाइबल में स्थान" विषय के तहत बाइबिल में वर्णित कुछ देशों और उनके प्रसिद्ध स्थानों के बारे में कई दिलचस्प तथ्य जानने को मिलते हैं, इस महीने आइए हम "मकिदुनिया" पर संक्षेप में बात करते हैं।

परिचय

- ◀ प्रारंभ में मकिदुनिया ग्रीस का उत्तरी भाग था।
- ◀ बाद में, सिकंदर महान के काल में यह एक शक्तिशाली साम्राज्य बन गया (356-323 ई पू)।
- ◀ बाइबल के पुराने नियम में इसके नाम का उल्लेख नहीं है, ऐसा माना जाता है कि दानिय्यल 8:5-8 में वर्णित नर बकरा इस देश का राजा था।
- ◀ नए नियम में, मकिदुनिया रोमनों के शासन के अधीन है।
- ◀ फिलिप्पी, थिस्सलुनीके, बेरिया नगर इसमें थे।

प्रमुखताएँ

- ◀ मकिदुनिया नाम प्राचीन ग्रीक से लिया गया है जिसका अर्थ है "लंबा व्यक्ति" या "हाईलैंडर"। ऐसा माना जाता है कि इसका नाम वहां रहने वाले लोगों की ऊंचाई के कारण रखा गया है।
- ◀ मकिदुनिया की जनसंख्या लगभग 20 लाख 85 हजार है। जिनमें से 55% मसीही हैं।
- ◀ इनका राष्ट्रीय पशु "शेर" है। मकिदुनिया में पक्षियों की लगभग 328 प्रजातियाँ हैं।
- ◀ इसके अलावा, छोटे क्षेत्रफल वाले देशों में मकिदुनिया को अनेक पर्वतों वाला माना जाता है।
- ◀ प्रसिद्ध मदर टेरेसा मकिदुनिया राष्ट्र की थीं।

पौलुस और मकिदुनिया

- ◀ आप जानते हैं कि प्रेरित पौलुस ने अन्यजातियों के बीच सुसमाचार साझा किया था! पौलुस ने फिलिप्पी में प्रचार किया जो मकिदुनिया के शहरों में से एक की राजधानी है (प्रेरित.16:12)।
- ◀ पौलुस ने यरूशलेम में मसीहों के लिए मकिदुनिया मण्डली की खुशी और प्रचुर दान के बारे में अत्यधिक बात की (2 कुरिन्थियों 8:1-6)।

प्रिय युवाओं! पौलुस के सुसमाचार के कारण मकिदुनिया उन दिनों लोकप्रिय हो गया। आज, वह स्थान जहाँ आप रहते हैं आपके द्वारा साझा किए गए सुसमाचार के माध्यम से प्रसिद्ध हो सकता है! सुसमाचार प्रचार करो, यही हमारा कर्तव्य है!



किसकी आज्ञा मानें?



मैं एक ऐसे परिवार में पैदा हुआ जो यीशु को नहीं जानते थे और मैं बचाया गया। मैं अब 30 साल का हूँ। मेरे माता-पिता भी बच गए और आध्यात्मिक चर्च में जा रहे हैं। हालाँकि, विवाह के मामले में, वे लड़की की जाति का हवाला देते हुए 'नहीं' कहकर सभी गठबंधन रद्द कर देते हैं। कुछ साल पहले, एक युवा सभा में मैंने प्रार्थनापूर्वक निर्णय लिया कि मैं दहेज की मांग नहीं करूँगा या जाति या समुदाय के अनुसार शादी के लिए गठबंधन नहीं करूँगा। लेकिन मेरे माता-पिता के कारण मेरी शादी में देरी हो रही है, क्या दूसरी जाति में शादी करना गलत है? या क्या मेरा यह निर्णय गलत है कि, "मैं जाति नहीं मानूँगा"? मुझे समझ नहीं आया। क्या मुझे यीशु की आज्ञा माननी चाहिए या अपने पिता की? _जेबेज़, धर्मपुरी।

प्रिय भाई जेबेज़! आपके हृदय का दर्द और पीड़ा आपके पल से भली-भांति समझ में आती है।

सवाल यह है कि, "अगर मैं गलत निर्णय लेता हूँ, तो विवाह में बाधा आ सकती है। लेकिन जब मैंने एक अच्छा निर्णय लिया है तो मुझे ऐसी समस्याओं और बाधाओं का सामना क्यों करना चाहिए?" आपके दिल की गहराई में उठना स्पष्ट है। जेबेज़, आज बहुत से लोग जो खुद को ईसाई बताते हैं, वे अपनी जानकारी के बिना भी बंधन में हैं। कई विभाजन हैं जैसे - धन की इच्छा का बंधन और अपनी जाति के प्रति उच्च विचार रखने का बंधन। लेकिन अच्छा निर्णय क्यों?"

बिना यह जाने कि वे दासता में हैं, अपने निर्णय पर दृढ़ रहना उनकी अज्ञानता है। पहले के दिनों में एक ही समुदाय के सदस्य आपस में विवाह करते थे। चूँकि दोनों घरों के रीति-रिवाज, संस्कृति और व्यवहार एक जैसे होंगे, इसलिए वे यह सोचकर ऐसा करते थे कि इससे अनावश्यक समस्याओं से बचा जा सकेगा।

इसके अलावा जब अलग-अलग समुदाय के लोग शादी करते हैं तो कई बदलाव देखने को मिलते हैं। उनकी बातें अलग हैं, रीति-रिवाज अलग हैं, खासकर खान-पान, भोजन और त्योहार मनाने में अंतर है; इसी तरह कई अंतर भी हैं। इसके कारण, नया जीवन शुरू करने वाले जोड़े के बीच कई अनबन, झगड़े और भ्रम होंगे और इसलिए एक ही समुदाय या जाति के लोग शादी कर लेते हैं।

लेकिन समय के साथ, यह जाति विवाह में एक सर्वोपरि कारक बन गई है। बाइबल कहती है, "न तो कोई यहूदी है और न ही कोई यूनानी।" परमेश्वर किसी जाति को नहीं मानते। लेकिन यह दुखद है कि कई मसीही इस गलत प्रथा से चिपके हुए हैं। और यह चीज़ अपने बच्चों पर थोपना और भी दयनीय है।

जेबेज़, इस स्थिति में आप जो निर्णय लेने जा रहे हैं वह महत्वपूर्ण होने वाला है। विवाह के लिए आपने जो प्रतिज्ञा की है उसके अनुसार कार्य करना।

अपने पिता की आज्ञा मानने से क्या होगा ?



1. आपकी बात मानने से परिवार में खुशियां आ सकती हैं
2. विवाह तुरंत हो सकता है.
3. हर कोई यह कह सकता है कि, आपने भी अपने पिता की सामाजिक मान्यता को स्वीकार कर लिया है
4. लेकिन, आपको यह अपराध बोध हो सकता है कि आप उस निर्णय और प्रतिज्ञा को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं जो आपने परमेश्वर की उपस्थिति में ली थी।
5. आपकी आंतरिक भावनाएँ कह सकती हैं, 'तुमने पतरस की तरह यीशु को अस्वीकार कर दिया है' जिससे तुमने विवाह के लिए प्रेम किया है।

यदि आप अपने पिता के वचन का पालन नहीं करते हैं तो क्या हो सकता है ?

1. आपके परिवार में, आपके दृढ़ निर्णय के कारण, भ्रम और कलह की स्थिति बढ़ सकती है।
2. वे बाइबल के आधार पर आप पर यह आरोप भी लगा सकते हैं, "जो अपने माता-पिता का आदर नहीं करता, वह अवज्ञाकारी है।"
3. एक जाति के उत्साह के कारण पिता और पुत्र के रिश्ते में अलगाव होने की संभावना रहती है।
4. यदि आप जाति का ध्यान रखे बिना विवाह करेंगे, जैसा कि आपने प्रार्थना की है, तो संभवतः आपके पिता विवाह में नहीं आएँगे।
5. तुम्हें ऐसा लग सकता है कि मैंने अपने पिता की अपेक्षा यीशु को प्रसन्न किया है।

प्रिय जेबज़, मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप थकें नहीं क्योंकि हमें आराम से जीवन जीने का वादा नहीं किया गया है, क्योंकि हमने ईश्वर के वचन का पालन करते हुए और सभी पहलुओं में उसे प्रसन्न करते हुए इस मसीही जीवन को जीने के लिए प्रतिबद्ध किया है। इसका मतलब धार्मिकता के लिए कष्ट उठाना भी हो सकता है, यानी वचन के प्रकट सत्य पर चलने के लिए खड़े होना। मैं आपको गारंटी दे सकता हूँ कि प्रभु के दिन आपका इनाम महान होगा जब आप इस जीवन में उन्हें स्वीकार करेंगे और उनका सम्मान करेंगे। परमेश्वर आपके हाथों को मजबूत करें और आपकी पीढ़ी को यीशु के शक्तिशाली नाम पर जाति के इस राक्षस को तोड़ने के लिए आगे आने दें।

विवाह के संबंध में बाइबल जो तीन महत्वपूर्ण बातें कहती है:

1. नीति. 18:22:- जिसने पत्नी ब्याह ली, उसने उत्तम पदार्थ पाया, और प्रभु की उस पर हुई। यह केवल परमेश्वर के निर्देश और मार्गदर्शन के तहत है, आपको एक अच्छी पत्नी का आश्वासन दिया जाता है क्योंकि आप वचनों को पढ़ने और प्रार्थना करने के माध्यम से उसकी तलाश जारी रखते हैं, आप यह जानकर निश्चित हो सकते हैं कि परमेश्वर आपके लिए अपना उद्देश्य पूरा करेंगे।
2. 2 कुरि. 6:14:- परमेश्वर का वचन अविश्वासियों के साथ असमान रूप से न जुड़ने की सलाह देता है। इसलिए सुनिश्चित करें कि आप उस लड़की से शादी करते समय आज्ञाओं का पालन न करें बल्कि परमेश्वर का पालन करें, जिसने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है और पूरे दिल से प्रभु से प्यार करती है।
3. नीति. 31:30:- पहला गुण जो आपको अपनी लड़की में ढूँढना है वह यह है कि वह परमेश्वर से डरती है। दुनिया पीछे है

क- उम्र

ख- सौंदर्य

ग- जाति/नकद/रंग

घ- दहेज

च- शिक्षा

लेकिन परमेश्वर की संतान होने के नाते आपको इस बात पर विचार करने की जरूरत है कि क्या लड़की परमेश्वर से डरती है, जिसकी वह स्वयं देखभाल करने के लिए कहते हैं।

परमेश्वर पर भरोसा रखो!



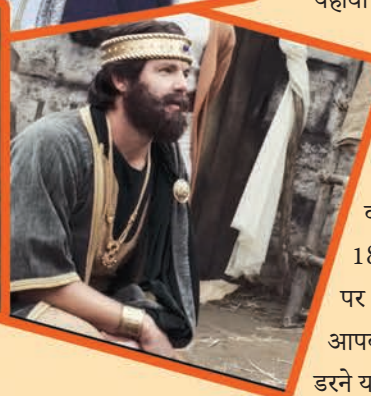
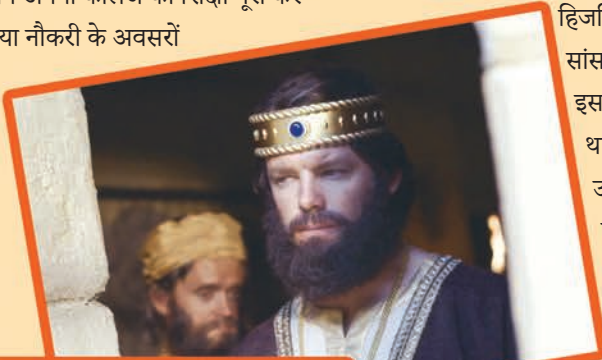
इस निराशाजनक दुनिया में हम हर दिन विभिन्न प्रकार के संघर्षों, कठिनाइयों और वित्तीय समस्याओं से घिरे रहते हैं। इन परिस्थितियों से बचने का एकमात्र तरीका परमेश्वर पर भरोसा करना है। हो सकता है कि आपने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर ली हो और आप इस बात को लेकर असमंजस में हों कि कॉलेज की पढ़ाई के लिए क्या चुना जाए। या हो सकता है कि आपने अपनी कॉलेज की शिक्षा पूरी कर ली हो और अपनी उच्च शिक्षा या नौकरी के अवसरों

की प्रतीक्षा कर रहे हों। आप किसी भी परिस्थिति में हों, बस यीशु पर भरोसा रखें, आप सफल होंगे!

शायद आप अत्यधिक प्रतिभाशाली, बड़े विद्वान, धनवान, लोगों पर प्रभाव रखने वाले हों। लेकिन अगर आप इन चीजों पर भरोसा करते हैं तो आप सफल नहीं हो सकते। उस परमेश्वर पर भरोसा करें जिसने आपको उपरोक्त सभी चीजें दीं, आप निश्चित रूप से समृद्ध होंगे।

हिजकिय्याह 25 वर्ष की आयु में इस्राएल का राजा बना। “और उस ने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, अर्थात् उसके पिता दाऊद के समान” (2 राजा 18:3)। अशूर के राजा शल्मनेसेर ने हिजकिय्याह के विरुद्ध चढ़ाई की और परमेश्वर के नाम की निन्दा की, और सब लोगों को धमकाया। उस समय हिजकिय्याह ने अपनी सेना

का बल और धन न देखा, और न अपने मुख्य सलाहकारों की बात मानी, पहिले तो वह यहोवा के भवन की ओर दौड़ा और कहा, हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हमें उसके हाथ से बचा, कि सब पृथ्वी के राज्य-राज्य जान लेंगे कि हे प्रभु, केवल आप ही परमेश्वर हैं।” (2 राजा 19:19)



हिजकिय्याह ने अपने पास मौजूद सभी सांसारिक चीजों पर भरोसा नहीं किया, इसके बजाय वह परमेश्वर पर विश्वासयोग्य था, और इसलिए परमेश्वर ने बड़े युद्ध में उसके लिए लड़ाई लड़ी। जब हिजकिय्याह संकट में पड़ा, तब उसने यहोवा को पकड़ लिया, और उसके पीछे चलना न छोड़ा, परन्तु जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, उसका पालन किया। यहोवा उसके साथ था; वह जहां जहां

गया वहां वहां सफल हुआ (2 राजा 18:6-7)। जब आप ईश्वर पर भरोसा करते हैं, तो आपको अपने कठिन समय में डरने या परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। परमेश्वर आपके भविष्य

के सभी प्रयासों में आपके साथ रहेगा, चाहे वह पढ़ाई हो या काम या शादी, वह आपके साथ रहेगा और सब कुछ समृद्ध करेगा।

आम तौर पर, आज की दुनिया में बहुत से लोग सोचते हैं कि वे

अपनी ताकत और ज्ञान से जीवित रह सकते हैं। आपको स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि, इस प्रकार के विश्वास वाले लोग परमेश्वर से दूर रह रहे हैं। “शापित है वह जो मनुष्य पर भरोसा रखता है, जो शरीर की शक्ति पर भरोसा करता और जिसका हृदय प्रभु से दूर हो जाता है” (यिर्मयाह 17:5)। बाइबल कहती है कि शापित हैं वे लोग जो परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते और उससे दूर रहते हैं। धन्य हैं वे जो मनुष्यों के बजाय परमेश्वर पर भरोसा करते हैं। सोचिए आपका विश्वास किस पर है? हिजकियाह के समान न तो उसके पहले और न उसके बाद कोई राजा हुआ, जो परमेश्वर पर भरोसा रखता हो। जब आप हिजकियाह की तरह भरोसा करेंगे तो आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे।

इस पापी संसार में आप अपनी शक्ति से पवित्र नहीं रह सकते। यदि आप वेश्यावृत्ति, व्यभिचार, इच्छा और शैतान की चाल जैसी दुनिया की गंदगी से दूर रहना चाहते हैं तो आपको परमेश्वर पर भरोसा करके जीना सीखना चाहिए। यूसुफ का जीवन हर दिन पाप से घिरा हुआ

था। परन्तु वह परमेश्वर से दूर न हुआ, और क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था, इसलिए वह पाप से दूर भागा। यूसुफ मिस्र में एक गुलाम के रूप में गया, लेकिन वह खुद को उन घृणित चीजों से बचाने में सक्षम था जो राष्ट्र में उसके आसपास हो रही थीं, जैसे पापी स्वभाव, मूर्ति पूजा, व्यभिचार, मानवीय चालें। वह अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करके पूरे देश के लिए एक आशीर्वाद था।

मेरे प्यारे नौजवानों! शिक्षा, डिग्री और योग्यताओं का निर्माण हमारे जीवन के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन हमें यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि हमारी अपनी ताकत और ज्ञान कभी भी हमारी मदद नहीं करेगी। चुनौतियों, संघर्षों और गंदगी से भरी दुनिया में यदि आप पवित्र और सफल जीवन जीना चाहते हैं, तो हिजकियाह और युसुफ की तरह बनें और अपनी सभी स्थितियों में परमेश्वर पर भरोसा करें। “क्योंकि प्रभु तेरे पक्ष में रहेगा, और तेरे पांव को फन्दे में फंसने से बचाएगा”

(नीतिवचन 3:26)Δ

राष्ट्र के लिए प्रार्थना करें...

‘यीशु छुड़ाता है’

विश्व जागृति प्रार्थना भवन

हर पाँचवाँ सप्ताह रविवार को हम युवाओं के लिए रिवाइवल इग्राइटर्स फ़ेलोशिप का आयोजन कर रहे हैं, जिसे निम्नलिखित तारीखों [30/07/2023, 29/10/2023, 31/12/2023] पर जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज़ यूट्यूब चैनल पर प्रसारित किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए कॉल करें। नीचे दिए गए नंबर



Jesus Redeems - Hindi



www.comfortertv.com

दिल्ली

152, Pratap Nagar,
Near Hari Nagar Bus Depot,
New Delhi – 110 064.

Ph: 011-25616253 / 35580428.

कार्यालय समय: प्रातः 9:00
बजे से सायं 5:30 बजे तक

राँची

HPDC Hall,
Near St. Paul College,
Church Road, Bahubazar, Ranchi,
Jharkhand - 834001

Ph: 0952 333 6010

कार्यालय समय: प्रातः 9:30 बजे से
सायं 5:00 बजे तक

मुम्बई-धारावी

नं: टी/1, ब्लॉक 11,

90 फीट रोड, राजीव गाँधी नगर,
धारावी मुम्बई - 400 017.

Ph: 80824 10410

कार्यालय समय: प्रातः 9:00 बजे से
रात्रि 8:00 बजे तक

जरिकपुर-पंजाब

SCF 19, 1st Floor,

Dhakoli Kalka Road, NH - 22, Near city court
Shopping Complex, जरिकपुर-पंजाब.

Ph: 94177 26492

कार्यालय समय: प्रातः 9:30 बजे से
सायं 5:00 बजे तक

मुम्बई-Malad

'Bethel', Plot 305/E mith chowky
Marve Road, Malad (W), Mumbai - 400064.

Ph: 96640 50567

कार्यालय समय: प्रातः 9:00 बजे से
रात्रि 8:00 बजे तक



यदि आप परमेश्वर पर निर्भर हैं तो वह आपकी ज़रूरतें पूरी करेगा!

मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है (भजन 121:2)

हो सकता है कि आप अपने जीवन में ऐसी परिस्थितियों से गुज़र रहे हों जो आपको सोचने पर मजबूर कर दें, 'मेरी मदद कहाँ से आएगी? मेरी ज़रूरतें कैसे पूरी होंगी? शायद आपके दिल में ऐसे सवाल हों, 'मेरी ज़रूरतें इतनी बड़ी हैं, मेरी मदद कौन करेगा?' या जिसने आपकी मदद करने का वादा किया था वह आपको भूल गया होगा या वह अभी आपकी मदद करने की स्थिति में नहीं है। बाइबल कहती है, "मेरी सहायता स्वर्ग और पृथ्वी के रचयिता प्रभु की ओर से आती है"। डरो मत! आपको कई असफलताओं, बाधाओं और धोखे का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन परमेश्वर से मिलने वाले आशीर्वाद को कोई नहीं रोक सकता। वह एक ऐसा परमेश्वर है जो चमत्कारी तरीकों से सहायता प्रदान करता है।

परमेश्वर वास्तव में लोगों के माध्यम से सहायता प्रदान करता है। परन्तु हमारा विश्वास केवल परमेश्वर पर ही बना रहे। परमेश्वर बचा ले, क्योंकि एक भी भक्त नहीं रहा; मनुष्यों में से विश्वास योग्य लोग मर



मिटे हैं। (भजन 12:1)। परमेश्वर हमारा सहायक है। प्रभु ही वह है जो हमारे लिये सब कुछ करता है और हमारी आँखें उसी पर लगी रहेंगी। लेकिन कई बार परमेश्वर पर टिकी हमारी नज़रें बिना हमारी जानकारी के भी इंसानों की ओर मुड़ जाती हैं। जब प्रभु ने मुझे अपनी सेवा करने के लिए बुलाया, तो मैंने यह कहते हुए ईश्वर के साथ एक समझौता किया, 'मैं आपकी सेवा करने के लिए खुद को समर्पित करता हूँ, लेकिन चाहे यह मेरी व्यक्तिगत आवश्यकता हो, मैं हमेशा केवल आपको ही देखूंगा। पाँच रुपये के लिए भी मुझे दूसरों से सहायता नहीं माँगनी पड़े; केवल तुम्हें ही मेरी ज़रूरतें पूरी करनी होंगी।' प्रभु ने मुझसे वादा किया, 'कल की चिंता मत करो। मैं तुम्हारी हर दिन की ज़रूरतों को पूरा करूंगा और तुम्हारा ख्याल रखूंगा, डरो मत।' उस वादे पर भरोसा करते हुए, मैंने खुद को उनकी सेवा के लिए समर्पित कर दिया और कदम बढ़ाया।

मैंने अपनी सेवा वर्ष 1978 में शुरू किया और वर्ष 1980 में 'जीसस रिडीम्स' पत्रिका सेवा शुरू की गयी। एक दिन प्रभु ने मुझसे वादा किया, "इस पत्रिका के माध्यम से, मेरे द्वारा दिए गए संदेशों को लिखो और लोगों को बताओ, और इससे बहुत से लोग बचेंगे।" पत्रिका प्रकाशित करते समय सदस्यता की माँग नहीं की जानी चाहिए।

पत्रिका उन सभी को निःशुल्क भेजे जो इसकी मांग करते हैं। मैं लोगों के दिलों को इस सेवा का समर्थन करने के लिए प्रेरित करूंगा। मैंने प्रभु की आज्ञा का पालन किया और 1980 में पत्रिका सेवा शुरू की। हमने पहले महीने में केवल 300 पत्रिकाओं के साथ शुरुआत की। धीरे-धीरे संख्या एक हजार तक पहुँच गई।

कुछ महीने बीत गए। एक दिन, एक भाई प्रिंटिंग प्रेस से मेरे घर आया और मुझसे प्रकाशित पत्रिकाओं के लिए प्रिंटिंग प्रेस शुल्क का भुगतान करने को कहा। मेरे पास उसे देने के लिए पैसे नहीं थे। मैंने उससे कहा कि मैं जल्द ही भुगतान कर दूंगा और उसे भेज दिया। आमतौर पर, हमारा डकिया हर दिन लगभग 1 बजे के आसपास डाक पत्र और एमओ (मनीऑर्डर) लाता था। मैं यह सोचकर इंतजार कर रहा था कि इससे आने वाले पैसे का उपयोग मैं छपाई के भुगतान के लिए कर सकता हूँ। लेकिन, उस विशेष दिन पर; मुझे केवल बहुत सारे पत्र मिले लेकिन एक भी एमओ नहीं मिला, यह मेरे लिए एक बड़ी निराशा थी जो पोस्ट-मैन और उसके द्वारा लाए गए एमओ पर भरोसा करता था। इस पैसे का भुगतान कैसे किया जाए इस उलझन में, मैं अपने कमरे में गया और घुटनों के बल बैठकर परमेश्वर से प्रार्थना की।

फिर प्रभु मुझसे बातें करने लगे। 'तू किस पर भरोसा करता है? तू मुझ पर विश्वास करता है? या, क्या तू उन मनुष्यों पर भरोसा करते हो जो भेंट भेजते हैं?' उसने पूछा। उस दिन, प्रभु ने मुझे एक सबक सिखाया। तभी मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ।

मेरी जानकारी के बिना, मेरी नज़रें परमेश्वर से हटकर उन लोगों की ओर चली गईं जो मेरी मदद करते हैं। हमें नहीं लगता कि हमारी आस्था की आँखों का परमेश्वर से हट जाना गलत है। हमारे लिए ये कोई बड़ी बात नहीं लगती। लेकिन जब हम गहराई से देखेंगे तभी हमें इसमें गलती का एहसास होगा।

जब मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ तो मैं फूट-फूट कर रोने लगा। मेरा भरोसा तुझ पर है प्रभु, आपने मुझसे वादा किया था 'मैं तेरी मदद करूँगा'। मेरी दृष्टि उस प्रभु पर होनी चाहिए थी जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया। लेकिन मेरी नजर उन लोगों की तरफ चली गई जो पैसे भेज रहे थे। मैंने आँसुओं के साथ प्रभु से प्रार्थना की, अपने पापों को स्वीकार किया और उस से क्षमा मांगी। जब मैंने अपनी प्रार्थना पूरी कर ली, तो एक भाई साइकिल से मेरे घर आया और घंटी बजाई। जब मैं बाहर आया, तो उस ने मुझे कुछ रुपये दिए, और कहा, "यहोवा ने आपको यह भेंट देने के लिये मुझ से कहा है"। मेरे प्राप्त करने और उसके लिए प्रार्थना करने के बाद वह चला गया। जब मैंने अपने हाथ में रखे पैसे देखे तो वह बिल्कुल वही पैसे थे जो मुझे प्रेस को देने थे। मेरी आँखों से खुशी के आँसू बह निकले।

प्रभु ने मुझसे कहा, "मैं वह परमेश्वर हूँ जो तुम्हारी आवश्यकताओं को पूरा करता हूँ"। तुम्हें मदद तो मुझसे ही मिलेगी, लेकिन तुम्हें अपनी नज़रें मुझ पर ही केंद्रित रखनी होंगी। प्रभु ने मुझे केवल उस पर विश्वास रखना सिखाया। उस दिन से लेकर आज तक, मैं अपनी सभी ज़रूरतों के लिए प्रभु की ओर देखता हूँ।

आज आपका भरोसा किस पर है? क्या ये आपके बच्चे हैं? आपके रिश्तेदारों पर? आपके दोस्तों पर? या, क्या उस व्यक्ति पर जिसने

आपकी मदद करने का वादा किया है? जब तुम अपनी आँखें प्रभु की ओर उठाओगे, तो वह किसी न किसी व्यक्ति के माध्यम से तुम्हारी सहायता करेगा। जब एलियाह करित की नाले के पास रह रहा था, तो परमेश्वर ने उसे खिलाने के लिए कौवे का इस्तेमाल किया। कौवे हर सुबह और शाम को उसके लिए रोटी और मांस लाते थे।

एलियाह, जिसने अपने भेजने वाले प्रभु की आज्ञा का पालन किया, वह उसे प्रदान करने में सक्षम है। इसलिए शुरुआत में उसे परमेश्वर पर अत्यधिक विश्वास और भरोसा रहा होगा जिसने उसे चमत्कारिक ढंग से कौवे द्वारा खिलाया था। परन्तु जैसे-जैसे दिन बीतते गए, और यह नियमित होता गया, एलियाह यह सोचकर कौवे की प्रतीक्षा करता रहा, "सवेरे और सांझ इस समय कौआ अवश्य मेरे लिये भोजन लाएगा।" एलियाह, जिसे प्रावधान करने वाले प्रभु की ओर देखना था, अब कौवे की ओर देखने लगा। इसलिए प्रभु ने एलियाह को कौवों के साथ खाना खिलाना बंद कर दिया और उससे सारपत को जाने के लिए कहा। उसने उससे यह भी वादा किया कि यदि कौआ नहीं होगा तो उसे एक विधवा खाना खिलायेगी। परन्तु हमारी दृष्टि केवल प्रभु पर ही लगी रहनी चाहिए।

आज प्रभु कहते हैं, तेरी सहायता केवल मुझ ही से होगी, जो आकाश और पृथ्वी का रचयिता है। यह कैसे आएगा? आपकी अप्रत्याशित स्रोतों से मदद मिलेगी। लेकिन आज आपकी ज़रूरत पैसे की है, कर्ज चुकाने की है, नौकरी की ज़रूरत है, व्यवसाय की ज़रूरत है, शिक्षा का खर्च है, या कोई अन्य ज़रूरत है, तो अपनी नज़रें परमेश्वर पर केंद्रित रखें। उससे कहो, 'परमेश्वर, तुम मेरी आशा हो, मैं अपनी आँखें तुम्हारी ओर उठाता हूँ' और तुम पाओगे कि तुम्हारी ज़रूरतें चमत्कारिक रूप से पूरी हो गईं।



उत्तर और पूर्व भारत इग्नाइटर्स की रिपोर्ट

प्रभु यीशु मसीह की स्तुति और महिमा हो। यीशु छुटकारा सेवाकाही के द्वारा उत्तर और पूर्वी भारत में प्रभू कि इच्छा पूरी हो रही है | प्रभू येशु के अगुवाई से यीशु छुटकारा सेवाकाही के द्वारा मई 2023 के महीने में उत्तर और पूर्वी भारत में हमारे इग्नाइटर्स के लिए फॉलोअप कैंप का आयोजन किया गया था | कई युवा, पादरियों और हमारे इग्नाइटर्स आए और हमारे प्रभु यीशु के स्पर्श को अनुभव किया | उन्हें प्रोत्साहित किया गया और प्रार्थना समूहों का संचालन करने और वहाँ चर्चों के माध्यम से हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार का प्रचार करने का वादा किया |

रायपुर-ज़िला, छत्तीसगढ़ में इग्नाइटर्स फॉलोअप कैंप का आयोजन किया था | परमेश्वर की कृपा से 10 जिला में कई समन्वयक आए और 200 प्रार्थना कक्ष शुरू करने का वादा किया | बलौदा बाजार जिले, छत्तीसगढ़ में भी 130 सदस्य आए और 50 प्रार्थना कक्ष शुरू करने का वादा किया।

मध्य प्रदेश में छिंदवाड़ा, मंडला, जबलपुर जैसे कई जिलों में कई विश्वासी और पादरी एक साथ आए, परमेश्वर के हाथ कहीं शक्तिशाली चमत्कार हुआ | जबलपुर – 23 चर्चों से युवाओं ने भाग लिया और 20 प्रार्थना कक्ष शुरू करने का वादा किया, मंडला जिला-मध्य प्रदेश में 20 चर्चों से 125 युवा आए और 20 प्रार्थना कक्ष शुरू करने का वादा किया। छिंदवाड़ा में 130 लोग आए, उसमें से 20 चर्चों ने 20 प्रार्थना कक्ष शुरू करने का वादा किया।





कल हमारा है!



मेहनती और कड़ी मेहनत करने वाले युवा विजेताओं को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। क्या आप एक सफल यात्रा करना चाहते हैं? सबसे पहले, अपने लिए एक नया रास्ता बनाएं। दूसरा, उस नये रास्ते पर दुर्गम पत्थर, कांटे, असफलता, निराशा और आलस्य जैसी बाधाओं को दूर करें और उन चीजों को उस रास्ते से पूरी तरह हटा दें। अब आप प्रसन्नतापूर्वक चल सकते हैं। आपके पथ को सफल बनाने के लिए, आपके आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए एक सफल व्यक्ति का मार्ग यहां दिया गया है...



श्रीधर वेम्बू का जन्म एक छोटी सी खेती करने वाले परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल और कॉलेज चेन्नई में की। वह सैन डिएगो, कैलिफ़ोर्निया में क्वालकॉम में शामिल हुए और दो साल तक काम किया, बाद में वह अपने देश में एक व्यवसाय शुरू करना चाहते थे, अपनी इच्छा के परिणामस्वरूप, उन्होंने अपने भाई के साथ एक सपने के साथ चेन्नई में एक स्टार्ट-अप कंपनी शुरू की। नई प्रोसेसिंग के साथ शुरू किए गए 'वेम्बू सॉफ्टवेयर' ने अच्छी बढ़ोत्तरी हासिल की। इस प्रकार वेम्बू ने ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए सॉफ्टवेयर सेवाओं को महत्व देना शुरू कर दिया। इससे उन्हें बहुत जल्दी बड़ी संख्या में ग्राहक मिल गए।

सन् 2000 तक कंपनी का कारोबार करोड़ों डॉलर का हो गया.. सॉफ्टवेयर प्रदाता कई संकटों का सामना कर रहे थे, इस दौरान श्रीधर वेम्बू की कंपनी ने कड़ी मेहनत की और अधिक ग्राहकों को आकर्षित करना शुरू कर दिया। वर्ष 2009 में कंपनी का नाम बदलकर ZOHO Corporation कर दिया गया।

उन्होंने ग्रामीण छात्रों को व्यावसायिक सॉफ्टवेयर विकास शिक्षा प्रदान करने के लिए 2004 में ZOHO स्कूल की स्थापना की। उनकी ZOHO सॉफ्टवेयर कंपनी में 15 से 20% कर्मचारी ऐसे हैं जिन्होंने स्कूल छोड़ दिया है और कॉलेज से स्नातक नहीं किया है। ZOHO कंपनी ने इन छात्रों को उचित प्रशिक्षण देकर ऊंचे स्तर तक पहुंचाया है।

2020 में उन्होंने "ग्रामीण विद्यालय प्रारंभ" की घोषणा की जो मुफ्त प्राथमिक शिक्षा पर केंद्रित है। वर्तमान में ZOHO कंपनी अरबों डॉलर मार्जिन के राजस्व के साथ एक सफल कंपनी के रूप में चल रही है। दुनिया भर में लगभग 10,000 लोग ZOHO में काम कर रहे हैं। श्रीधर वेम्बू विश्व स्तर पर 59वें सबसे अमीर भारतीय हैं। उन्हें भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।



युवा लोग जो इसे पढ़ रहे हैं! एक छोटी कंपनी के रूप में शुरू हुई ZOHO आज एक ऐसी कंपनी के रूप में खड़ी है जो कई छात्रों के लिए नौकरी के अवसर पैदा करती है। यह श्रीधर की लगन और अथक परिश्रम के कारण है। इन दोनों गुणों ने श्रीधर के लिए एक नई राह बनाई और उन्हें उस पर सफलतापूर्वक चलने में मदद की। आप कोशिश करें तो रास्ता बना भी सकते हैं और उस पर सफलतापूर्वक चल भी सकते हैं। क्या आप विजयी लय बनाने के लिए तैयार हैं? यहाँ आपका मौका है!

परामर्श में महान गिदोन

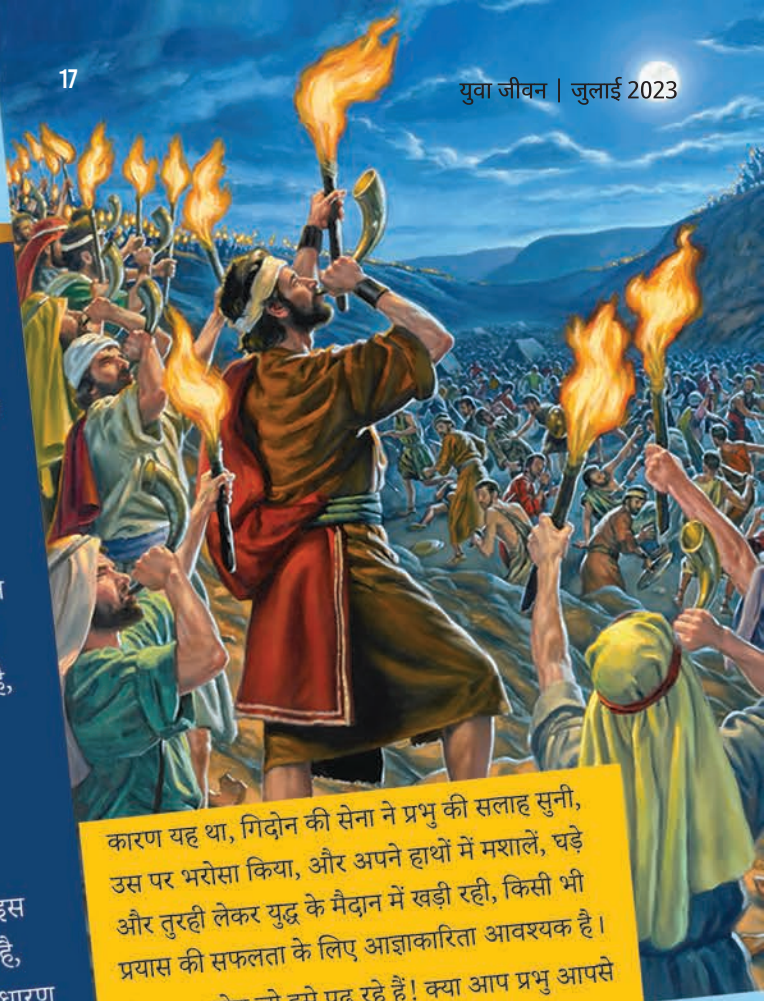
इस "परामर्श में महान" श्रृंखला में, हम बाइबल में परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए गए नीतियों के बारे में पढ़ रहे हैं जो इस्राएल के लोगों को मुक्ति दिलाने के लिए उपयोग किया जब उनके खिलाफ लड़ाई और संघर्ष हुआ था। क्या आप इस्राएलियों की कहानी जानते हैं जिन्होंने बिना पर्याप्त हथियारों और केवल 300 पुरुषों के द्वारा एक बड़ी सेना को हरा दिया; जबकि उनके शत्रु योद्धा टिड्डियों के समान असंख्य थे; और उनके ऊँट समुद्र कि रेत की तरह बहुत थे। हाँ! जीत निश्चित है जब कोई व्यक्ति प्रभु पर निर्भर रहता है, और उसकी सलाह का पालन करते हुए कार्य करता है!

गिदोन और 300 आदमी:

मिद्यानी, पूर्व के पुत्रों और अमालेकियों ने एक बड़ी सेना बनाकर इस्राएलियों के विरुद्ध युद्ध के लिये पड़ाव डाला। इस स्थिति में, हमारे परमेश्वर ने, जो एक महान परामर्शदाता है, इस्राएलियों को गिदोन के माध्यम से बचाया, जो एक साधारण व्यक्ति था जो युद्ध में जाने के योग्य नहीं था।

क्या आपने कभी सोचा है कि इसका मुख्य कारण क्या है?

जब प्रभु ने कहा, "यदि मैं कहूँ, 'यह तुम्हारे साथ चलेगा, 'वह जाएगा', सभी बाधाओं के बावजूद, गिदोन परमेश्वर पर निर्भर था। इसके परिणामस्वरूप, गिदोन की छोटी सेना के सामने एक बड़ी सेना बिखर गयी। प्रिय युवाओं! हर दिन आपके सामने ऐसे प्रश्न आ सकते हैं, "मैं किसके साथ जुड़ूँ, मुझे इस मामले में क्या निर्णय लेने चाहिए? मुझे इन लोगों को कैसे जवाब देना चाहिए? मैं जहां हूँ वहां गवाह के रूप में कैसे रहूँ?" ऐसे समय में, क्या आप हर बार स्वयं निर्णय लेने से थक जाते हैं? या क्या आप हर बार ईश्वर से सलाह मांगते हैं और सही काम करते हैं? उस बारे में सोचें!



कारण यह था, गिदोन की सेना ने प्रभु की सलाह सुनी, उस पर भरोसा किया, और अपने हाथों में मशालें, घड़े और तुरही लेकर युद्ध के मैदान में खड़ी रही, किसी भी प्रयास की सफलता के लिए आज्ञाकारिता आवश्यक है। प्रिय युवा लोग जो इसे पढ़ रहे हैं! क्या आप प्रभु आपसे जो कह रहे हैं उसे सुनने और उसका पालन करने में सक्षम हैं? जब गिदोन की सेना ने प्रभु की योजना का पालन किया और अपने घड़े तोड़ दिए और तुरहियाँ बजाई, तो देखो हमारे सर्वशक्तिमान प्रभु ने क्या किया! यहोवा ने उन सैनिकों को जो इस्राएल के लोगों के विरुद्ध आए थे, एक दूसरे के विरुद्ध तलवारें खिंचवाने के लिए नियुक्त किया। अंत में, एक बड़ी भीड़ मात्र 300 लोगों के सामने से भाग गई! इस्राएलियों ने युद्ध जीत लिया! युवा दिल जो इसे पढ़ रहे हैं! क्या आप आज एक सफल जीवन जीने के लिए सभी परिस्थितियों में प्रभु पर निर्भर रहने का निर्णय लेंगे?

जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाए जाएं, उन में से कोई सफल न होगा, और, जितने लोग मुड़ई हो कर तुझ पर नालिश करें उन सभी से तू जीत जाएगा। यहोवा के दासों का यही भाग होगा, और वे मेरे ही कारण धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है ॥ यशायाह (54:17)

प्रार्थना मार्गदर्शिका

- « भारत में लगभग 33.41 लाख नर्स हैं।
- « भारत में 8,692 नर्सिंग कॉलेज है, हर साल 3 लाख नर्सों को स्नातक होते हैं।
- « भारत को WHO के मानदंडों के अनुसार 43 लाख और नर्सों की आवश्यकता है।
- « कम वेतन, भारी काम का बोझ और सम्मान की कमी भारत में नर्सों के विदेश जाने के मुख्य कारण हैं।
- « अमेरिका, ब्रिटेन और खाड़ी देशों में भारतीय नर्सों की भारी मांग है इसलिए कई लोग वहां काम करने जाते हैं।

नर्स



पुलिस विभाग

- « भारत में 13,765 पुलिस स्टेशन हैं।
- « इन स्टेशनों में लगभग 20,91,488 पुलिस अधिकारी कार्यरत हैं।
- « भारत में लगभग 2,15,504 महिला पुलिस अधिकारी कार्यरत हैं।
- « पुलिस विभाग में 5,31,737 रिक्तियां भरी गई हैं।
- « आंकड़ों के मुताबिक, तमिलनाडु में देश की तुलना में 6% ज्यादा महिला पुलिसकर्मी हैं।



- « भारत में 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं।
- « 543 निर्वाचन क्षेत्रों में 543 सदस्यों की गिनती हो रही है।
- « लगभग 91 करोड़ मतदाताओं के मतदान करने की उम्मीद है।
- « 8 राष्ट्रीय राजनीतिक दल और 54 राज्य राजनीतिक दल हैं।
- « भारत का 18वां लोकसभा चुनाव मई 2024 में होगा।

संसद चुनाव



मादक पदार्थों की लत

- « पिछले 10 वर्षों में दुनिया भर में नशीली दवाओं का उपयोग करने वालों की संख्या में 22% की वृद्धि हुई है।
- « भारत में 3.1 करोड़ लोग गांजे का सेवन करते हैं। 2.3 करोड़ लोग अफीम और हीरोइन जैसे नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं।
- « 8.5 लाख से ज्यादा लोगों में नशे के इंजेक्शन लगाने की आदत बढ़ गई है।
- « हमारे देश में 18% स्कूली छात्र नशे के आदी हैं।
- « भारत में गांजा, अफीम, हीरोइन, शराब आदि नशीले पदार्थों के सेवन से हर घंटे एक व्यक्ति आत्महत्या करता है।



जुलाई 2023



प्रार्थना विषय

1. आइए हम भारत में 33.41 लाख नर्सों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।
2. आइए प्रार्थना करें कि सरकारी और निजी अस्पताल हर साल सत्रातक होने वाली नर्सों को उपयुक्त नौकरी के अवसर प्रदान करने के लिए आगे आएँ।
3. आइए प्रार्थना करें कि भारत में नर्सों की कमी दूर हो जाए।
4. आइए हम प्रार्थना करें कि स्वास्थ्य विभाग नर्सों के कार्यभार, तनाव और अन्य मुद्दों के समाधान के लिए उचित कदम उठाए।
5. आइए प्रार्थना करें कि जो नर्सें विदेश में काम करने की कोशिश करेंगी, उन्हें भारत के अस्पतालों में उचित वेतन पर नौकरी की पेशकश की जाएगी।



प्रार्थना विषय

1. आइए हम भारत में 21 लाख पुलिस अधिकारियों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।
2. आइए हम सभी 21 लाख पुलिस अधिकारियों को सद्बुद्धि और विवेक देने की प्रार्थना करें।
3. आइए हम अपने केंद्रीय कानून और न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल के लिए परमेश्वर से सुरक्षा और बुद्धि की प्रार्थना करें।
4. आइए प्रार्थना करें कि सभी पुलिस अधिकारी ईमानदारी और निस्वार्थ भाव से काम करें।
5. आइए प्रार्थना करें कि सभी रिक्त पद भरे जाएँ, काम का दबाव कम हो और उन सभी को मानसिक शांति मिले।



प्रार्थना विषय

1. आइए प्रार्थना करें कि परमेश्वर मुख्य चुनाव आयुक्त श्री राजीव कुमार को, चुनाव आयुक्त श्री अनुप चन्द्र पांडे एवं श्री. अरुण गोयल को सही बुद्धि और ज्ञान दें।
2. आइए हम 2024 में होने वाले संसदीय चुनावों में परमेश्वर के शासन के लिए प्रार्थना करें।
3. आइए हम प्रार्थना करें कि चुनाव की तैयारी कर रहे दल अवैध गतिविधियों में शामिल न हों।
4. आइए हम सभी 91 करोड़ मतदाताओं को सही तरीके से वोट डालने की सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना करें।
5. आइए हम उन सभी 543 लोगों के लिए प्रार्थना करें जो 543 निर्वाचन क्षेत्रों में चुनाव लड़ रहे हैं, ताकि वे कमियों पर गौर करें और ऐसे वादे करें जिन्हें वे पूरा कर सकें।

प्रार्थना विषय

1. आइए हम नशे के प्रभाव के आदी लोगों की मुक्ति के लिए प्रार्थना करें।
2. आइए हम उन लोगों के पश्चाताप के लिए प्रार्थना करें जो दवा के प्रभाव को बढ़ाने के लिए इसके इंजेक्शन का उपयोग करते हैं।
3. आइए हम स्कूलों में पढ़ने वाले उन छात्रों के ठीक होने के लिए प्रार्थना करें जो नशे के आदी हैं।
4. आइए हम नशे की लत और आत्मघाती भावना पर लगाम लगाने के लिए प्रार्थना करें।
5. आइए हम सरकार के लिए प्रार्थना करें कि वे हमारे देश में इन सभी दवाओं पर प्रतिबंध लगाए।



जो लोग परमेश्वर पर निर्भर थे!

Thought drops: Bennita

राजा यहोशापात



मोआब के लोग, अम्मोन और बहुत से अन्य लोग यहोशापात के विरुद्ध युद्ध करने आए। इस कठिन परिस्थिति में, यहोशापात ने अपने पूरे देश में उपवास की घोषणा की, लोगों को प्रभु के भवन में इकट्ठा किया और मदद के लिए परमेश्वर को पुकारा।

तब प्रभु की आत्मा ने एक लेवी पर आकर कहा, “क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं, परन्तु परमेश्वर का है। कल उन पर चढ़ाई करो” (2 इतिहास 20:21) और उन्होंने अपना मुंह भूमि पर झुकाकर स्तुति करते हुए और गाते हुए परमेश्वर की आराधना की। जब यरूशलेम के लोग सबेरे उठकर युद्ध के लिये निकले, तब यहोशापात ने कहा, अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास कर, और तुम दृढ़ हो जाओगे, और जब वे गाने और स्तुति करने लगे, तब यहोवा ने उनकी ओर से युद्ध किया। अम्मोन, मोआब और सेईर पर्वत के लोग एक दूसरे

के विरुद्ध उठ खड़े हुए और एक दूसरे को नष्ट कर दिया।

प्रिय युवाओं, स्थिति चाहे कितनी भी छोटी या बड़ी क्यों न हो, जब हम यहोशापात की तरह प्रभु पर निर्भर रहेंगे, तो वह हमारे लिए महान कार्य करेगा।

अबिव्याह



उसने यरूशलेम में 3 साल तक राज्य किया। अबिव्याह और यारोबाम के बीच युद्ध हुआ। अबिव्याह ने अपनी सेना में 4 लाख सैनिक भर्ती किये। यारोबाम 8 लाख योद्धाओं के साथ तैयार था। अबिव्याह ने कहा, “यहोवा हमारे साथ है और हम उसकी आज्ञा मानते हैं। परन्तु यदि तुम आकर अपने परमेश्वर से लड़ोगे, तो तुम और इस्राएल के लोग सफल नहीं होगे।” परन्तु यारोबाम ने अबिव्याह की सेना के पीछे घात लगाई और यारोबाम की सेनाओं ने अबिव्याह के योद्धाओं पर चारों ओर से आक्रमण करना आरम्भ कर दिया, यहूदा के लोगों ने यहोवा की दोहाई दी। याजकों ने तुरही बजाई। जब यहूदा

के लोगों ने जयजयकार की, तब यहोवा ने यारोबाम को मारा, और उसे युद्ध में हरा दिया। अबिव्याह की सेना ने यारोबाम के लगभग 5 लाख इस्राएल योद्धाओं को मार डाला। (2 इतिहास 13)

प्रिय युवाओं! चूँकि अबिव्याह अपने पूर्वजों की तरह परमेश्वर पर निर्भर था, इसलिए इस्राएल के लोग हार गए। यहूदा के लोगों को जीत मिली। जीत गारंटी तब मिलती है जब आप प्रभु पर निर्भर रहते हैं, चाहे परिस्थिति कुछ भी हो!

जो लोग परमेश्वर पर निर्भर नहीं थे!

राजा आसा

यहूदा के राजा आसा ने यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में से चाँदी और सोना ले आया, और अराम के राजा बेन्हदद के पास सन्धि करके यह कहला भेजा, कि इस्राएल के राजा बाशा से अपनी सन्धि तोड़ दे, कि वह मुझ से दूर हो जाए। उसने राजा आसा से सहमति जताई और इस्राएल के नगरों के विरुद्ध अपनी सेनाएँ भेजीं। जब बाशा ने यह सुना, तो उस ने रामा का निर्माण करना बन्द कर दिया, और अपना काम बन्द कर दिया।

उस समय हनानी भविष्यद्वक्ता ने यहूदा के राजा आसा के पास आकर उस से कहा, तू ने जो अराम के राजा पर भरोसा किया है, और अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा नहीं रखा, इस कारण आराम की सेना तेरे हाथ से बच गई है। क्या ईथोपिया और लूबीम की सेना बहुत से रथों और सवारों सहित विशाल सेना थी? तौभी, क्योंकि तू ने यहोवा पर भरोसा रखा, उस ने उनको तेरे हाथ में कर दिया। क्योंकि यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इधर उधर दौड़ती रहती है, कि वह अपने आप को उन लोगों के लिये बलवन्त दिखाए जिसका मन उसके प्रति वफ़ादार है।” तुने मुखता की है, इसलिए अब से तू युद्ध से घिरा रहेगा।” आसा के 39वें शासनकाल में, यद्यपि उसके पैर में रोग था, फिर भी उसने परमेश्वर की नहीं, बल्कि चिकित्सकों की खोज की। उसके शासनकाल के 41 वर्ष में उसकी मृत्यु हो गई। (2 इतिहास 16)



प्रिय युवाओं! जब आसा ने प्रभु पर भरोसा किया, तो वह एक बड़ी सेना को हराने में सक्षम हो गया। परन्तु प्रभु पर निर्भर न रहने की मूर्खता के कारण उसे अनेक युद्धों का सामना करना पड़ा। जब हम प्रभु पर निर्भर होते हैं तो हमें हटाया नहीं जा सकता।

शिमशोन

शिमशोन का जन्म परमेश्वर की भविष्यवाणी के अनुसार हुआ था। वह गर्भ से ही परमेश्वर का नाज़ीर था। चूँकि वह परमेश्वर की आत्मा से भर गया था, उसने 300 लोमड़ियों को पकड़ा और प्रत्येक जोड़ी पूँछ के बीच एक मशाल लगा दी, जिससे पलिशतियों की खेती नष्ट हो गई। उसने गधे के जबड़े की हड्डी से 1000 लोगों को मार डाला। उसने 3000 पलिशतियों को मार डाला।

इसी प्रकार, शिमशोन ने प्रभु पर निर्भर रहने के कारण शक्ति और साहस प्राप्त करना जारी रखा। इस पर वह दलिला नाम की एक महिला के साथ रिश्ते में आ गया। पलिशतियों के सरदार उसके पास आये और उससे शिमशोन से उसकी शक्ति के रहस्य के बारे में पूछने को कहा और पूछा कि उसकी महान शक्ति कहाँ है। हालाँकि जब दलिला ने रहस्य जानने के लिए सैमसन पर दबाव डाला, तो उसे अपनी जान जोखिम में डालकर भी सच नहीं बताना चाहिए था। परन्तु उसने उसे सच्चाई बता दी। जब भेद खुला तो उसका सिर मुँडवा दिया गया। उसकी आंखें निकाल ली गईं। उन्होंने उसे काँसे की जंजीरों से बाँध दिया और बन्दीगृह में पीसने को कहा। शिमशोन ने अपनी सारी ताकत खो दी। (2 न्याय.13-21)



प्रिय युवाओं! जब शिमशोन प्रभु पर निर्भर था तो वह एक भयंकर सिंह को हराने में सक्षम था, जबकि प्रभु से दूर जाने पर उसने अपनी सारी शक्ति खो दी। आइए हम शिमशोन के समान न बनें और अपने प्रभु से दूर जाकर अपनी शक्ति न खोएं। इसके बजाय आइए हम उसके साथ रहें और उसकी नई शक्ति प्राप्त करें।

जागृति की दौड़

द ट्रैक

हर महीने हम "द ट्रैक" नामक इस खंड में 'परमेश्वर के लिए दौड़ने वाले लोगों' और 'मैराथन धावकों' के जीवन की खोज कर रहे हैं। परमेश्वर के सेवकों की दृढ़ इच्छाशक्ति ने परमेश्वर के लोगों के लिए मुक्ति और आशीर्वाद लाया। चूंकि हमें अंत समय की जागृति के लिए दौड़ने के लिए चुना गया है, इसलिए हमें इस बात पर ध्यान केंद्रित करके दौड़ना चाहिए कि, बहुतों को बचाना है और हमारे द्वारा आशीर्ष देना है। कभी कभी समस्या, संघर्ष और पीछे हटना हमारी दौड़ में बाधा लाती है या हमें गलत दिशा में दौड़ने के लिए मजबूर होना पड़ता है। आइए देखें कि इन बाधाओं को कैसे दूर किया जाए और जागृति के लिए कैसे दौड़ें।



Event: Caleb

वर्ष 1960 में रोम में आयोजित ओलंपिक में इथियोपिया के अबेबे बिकिला नामक एथलीट ने मैराथन दौड़ में भाग लिया था। तब तक, इथियोपिया ने ओलंपिक में कभी कोई पदक नहीं जीता था। अमेरिका, बेल्जियम और ब्रिटेन के एथलीटों से सभी की उम्मीदें बहुत अधिक थीं।

उस समय, अबेबे के जूते उन्हें ठीक से फिट नहीं हुए और उन्हें नंगे पैर दौड़ना पड़ा। चूंकि प्रतियोगिता दोपहर में शुरू हुई थी, और बहुत तेज़ गर्मी थी, बिकिला को तमाम बाधाओं का सामना करना पड़ा, इसके बावजूद उसने किसी भी बात की परवाह नहीं की और जीत को ही अपना एकमात्र लक्ष्य मानकर दौड़ा। अंत में, उन्होंने विश्व रिकॉर्ड बनाया और उस स्पर्धा में स्वर्ण पदक

जीता। किसी ने भी इतने कम समय में मैराथन पूरी नहीं की थी।

वह ओलंपिक में स्वर्ण पदक हासिल करने वाले पूर्वी अफ्रीका के पहले व्यक्ति बने। यदि अबेबे ने अपनी स्थिति को देख साहस छोड़ दिया होता, तो वह इतनी बड़ी उपलब्धि हासिल नहीं कर पाता। जीतने और अपने देश को गौरवान्वित करने के उनके दृढ़ संकल्प

Abebe Bikila



ने उन्हें इतिहास की किताब में नाम दिलाया है।

अबेबे के बारे में पढ़ते समय, मुझे एस्तेर 8:10 में संदेशवाहकों की याद आ गई, जो घोड़ों, तीव्र ऊंटों और खच्चरों की पीठ पर चढ़ते थे। यहूदियों को नष्ट करने के लिए राजा का एक आदेश 127 देशों में भेजा गया, क्योंकि हामान की साजिश के कारण एस्तेर और मोर्देकै की प्रार्थना से चीजें बदल गईं और विनाश रुक गया। काम अभी खत्म नहीं हुआ था।

127 राष्ट्रों के लिए यह खुशखबरी कि 'यहूदियों की सज़ा निलंबित कर दी गई है', निश्चित दिनों के भीतर उनकी अपनी लिपि और भाषा में जानी चाहिए अन्यथा यहूदी नष्ट हो जाएंगे।

इस कार्य को निष्पादित करने के लिए, शूशन के महल से संदेशवाहक भेजे गए और उनके दृढ़ संकल्प ने परमेश्वर के लोगों को विनाश से बचाया। आइए देखें कि वे कैसे कार्य करते होंगे?

उन्होंने राजा की शीघ्रता के अनुसार कार्य किया:

आमतौर पर हमने ऐसे डाकियों को देखा और सुना है जिन्हें कई चिट्ठियां मिलती हैं, लेकिन उन्हें यह पता नहीं होता कि उनके हाथ में चिट्ठी शिघ्रता क्या है। उनको नहीं पता कि यह किनको लिखा गया है, अगर पता सही हो तो ठीक, नहीं तो वे उसे वापस भेज देंगे।

जिस मिशन के लिए वे जा रहे थे, उस राजा की तात्कालिकता और जिस संदेश को वे ले जा रहे हैं उसके महत्व को समझते हुए, उन्होंने जल्दबाजी से काम किया, उन्होंने तब तक आराम नहीं किया जब तक कि उन्होंने संदेश को सही समय पर सही जगह पर नहीं पहुंचा दिया। एक सुसमाचार है कि हमें इन अंतिम दिनों में इसका प्रचार करने में जल्दबाजी करनी चाहिए। हमारा यीशु जल्द ही आ रहा है। वह कभी विलम्ब न करेगा (इब्रानियों 10:37)

राज्य के इस सुसमाचार को उसके आने से पहले सभी राष्ट्रों को एक गवाही के रूप में प्रचार किया जाना चाहिए। आज बहुत से लोग नरक के कगार पर हैं

क्योंकि उन्हें यह सुसमाचार प्रचार नहीं किया गया है। तो आइए हम प्रभु के हृदय के बोझ को समझने और उसके अनुसार कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध हों। शायद अगर हम खुशखबरी सुनाने में देर करेंगे तो हमारे लोगों पर भारी विनाश आ पड़ेगा। यदि हम सुसमाचार जानते हैं और उसे नहीं बताते तो क्या इसका दोष हम पर नहीं पड़ेगा? “समय को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं” (इफिसियों 5:16)।



तेज़ घोड़े, ऊँट और खच्चर:

जैसे ही संदेशवाहकों को खबर मिली, राजा के काम के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए तेज़ घोड़े, खच्चर और ऊँट उन्हें तेजी से ले जाने के लिए दिए गए। साधारण ऊँट या घोड़ा ऐसा नहीं कर सकता। केवल विशेष रूप से प्रशिक्षित घोड़े ही बिना थके समय पर गंतव्य तक पहुंच सकते हैं।

हालाँकि हमारे हाथ में सुसमाचार है, हमें इसे ईमानदारी से और अथक रूप से ले

जाने के लिए शक्ति और अभिषेक की आवश्यकता है। केवल अगर हमारे पास वह है तो हम इन अंतिम दिनों में शक्तिशाली रूप से सेवा करने में सक्षम होंगे। क्या हमारे पास पवित्र आत्मा की शक्ति और अभिषेक है? यदि नहीं, तो हमें इसके लिए माँगना होगा। आज यदि आप स्वयं को सुसमाचार का प्रचार करने के लिए समर्पित करते हैं, तो वह आपको वरदानों से भर देगा और आपका उपयोग करेगा। “वह अपने दूतों को आत्मा और अपने सेवकों को

आग की ज्वाला बनाता है।” (इब्रानियों 1:7)

प्रिय युवाओं! परमेश्वर ऐसे दूतों की तलाश कर रहे हैं जो पूरे देश में पाप और अभिशाप में नष्ट हो रही लाखों आत्माओं को सक्रिय रूप से सुसमाचार का प्रचार करेंगे। जैसे ही

आप इसे पढ़ते हैं, यदि शायद प्रभु आपके साथ हस्तक्षेप करते हैं, तो अपना जीवन उनके कार्य में समर्पित कर दें! आगामी महान जागृति में उसके लिए महान कार्य करने के लिए आगे बढ़ें! “फिर मैं ने यहोवा की यह वाणी भी सुनी, कि मैं किसे भेजूं, और हमारी ओर से कौन जाएगा?” तब मैं ने कहा, “मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज।” (यशायाह 6:8)।



Coffee with रिपोर्टर

नीनवे का राजा

रिपोर्टर: राजा को नमस्कार!

नीनवे के राजा: नमस्कार.

रिपोर्टर: महामहिम, हमें अपने बारे में और उस शहर के बारे में बताएं जिस पर आपने शासन किया था।

नीनवे का राजा: मैं वह राजा था जिसने नीनवे शहर पर शासन किया था, जहां एक लाख बीस हजार से अधिक लोग और कई जानवर रहते थे। नीनवे एक प्राचीन नगर था, जो असीरिया साम्राज्य की राजधानी था। यह बेबीलोन से 280 मील उत्तर में टाइग्रिस नदी के पूर्वी तट पर स्थित था। अपनी सुंदरता, वास्तुकला और बगीचे के लिए जाना जाने वाला नीनवे तीन दिन की दूरी पर एक महान शहर था।

रिपोर्टर: आपको क्या लगता है कि “परमेश्वर द्वारा विनाश की भविष्यवाणी” इतने समृद्ध, वन्यजीव-समृद्ध शहर में क्यों भेजी गई थी? किसने भविष्यवाणी की थी?

नीनवे का राजा: हाँ, भूमि समृद्ध थी। परन्तु जो लोग उसमें रहते थे वे दुष्ट, क्रूर और अनैतिक थे। नीनवे के लोगों को उनके पाप के

बाइबिल में ऐसे कई राजा हैं जिनके नाम का उल्लेख नहीं है लेकिन उन्हें उस स्थान के नाम से बुलाया जाता है जहां उन्होंने शासन किया था। नीनवे का राजा उनमें से एक है। पुराने नियम में, जब राजा पापपूर्ण जीवन जीते थे, तो उन्हें परमेश्वर के लोगों या भविष्यवक्ताओं द्वारा चेतावनी दी जाती थी, बाइबिल में ऐसे उदाहरण हैं जहां कुछ राजा ने चेतावनी को नजरअंदाज कर दिया और भविष्यवक्ताओं को दंडित किया या मार डाला। परन्तु नीनवे का राजा अपवाद था। जैसे ही विनाश की खबर उस तक पहुंची, उसने खुद को वैसे ही विनम्र कर लिया जैसे प्रभु चाहते थे। उसने आज्ञा देकर पूरे नीनवे में उपवास का प्रचार और प्रसार किया, और उसके लोगों और उसके देश के पशुओं ने भी उपवास किया। उसके कार्यों ने प्रभु को प्रसन्न किया, और सारा देश परमेश्वर के क्रोध से बच गया। आइए नीनवे के राजा के साथ काल्पनिक बातचीत देखें।

कारण दंड की भविष्यवाणी, जो अपनी बहुतायत तक पहुंच गई थी, इस्राएल के उत्तरी साम्राज्य के भविष्यवक्ता, अमिताई के पुत्र योना द्वारा दी गई थी, (2 राजा 14:25)।

भविष्यवक्ता योना गलील में नासरत से लगभग दो से तीन मील उत्तर में गत हेपेर शहर से था।

रिपोर्टर: जब भविष्यवक्ता योना ने चेतावनी दी, तो आपने और आपके लोगों ने क्या किया?

नीनवे के राजा: तब तक, मुझे लगता है कि मेरे लोग अपनी इच्छा के अनुसार रह रहे थे। भविष्यवक्ता योना ने भविष्यवाणी की, “चालीस दिन के भीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा!” जैसे ही उस ने चेतावनी दी, हमारी प्रजा ने परमेश्वर पर विश्वास किया, उपवास का प्रचार किया, और बड़े से लेकर छोटे तक सबने टाट ओढ़ लिया। योना ने नीनवे की एक दिन की यात्रा में ही लोगों को चेतावनी का संदेश दिया था, जबकि पूरे नीनवे की यात्रा तीन दिन की थी। इस प्रकार केवल एक-तिहाई आबादी को सूचित किया गया, लेकिन चेतावनी का संदेश जंगल की आग की तरह फैल गया और पूरे शहर तक पहुंच गया। जैसे ही यह बात मेरे कानों तक पहुंची, मैं सिंहासन पर से उठ गया, और अपना बागा उतारकर टाट ओढ़ लिया, और राख पर बैठ गया, क्योंकि मैं जानता था, कि इस्राएल का परमेश्वर दयालु है।

रिपोर्टर: उसके बाद क्या हुआ? नीनवे के राजा के रूप में, आपने क्या कदम उठाए?

नीनवे के राजा: रईसों से परामर्श करने के बाद, मैंने एक आदेश घोषित किया और प्रकाशित किया कि मनुष्य और जानवर, मवेशी और भेड़ को कुछ भी चखना नहीं चाहिए, न ही उन्हें चरना चाहिए और न ही पानी पीना चाहिए, और मनुष्य और जानवरों को टाट से ढंकना चाहिए और ऊँचे शब्द से परमेश्वर को पुकारें, और वे अपनी बुरी चाल और अपने हाथों की क्रूरता से फिरें।

रिपोर्टर: क्या आपके लोग आज्ञाकारी थे? फिर क्या हुआ?

नीनवे का राजा: हाँ, उन्होंने आज्ञा मानी। हमने अपने पुरखाओं से सुना है कि सदोम और अमोरा नष्ट हो गए। इसलिए मैं और मेरे लोग बहुत भयभीत थे। सब लोग अपनी बुरी चाल से फिर गए। और परमेश्वर ने देखा, कि हम अपने बुरे मार्ग से फिर गए हैं, और उस विपत्ति से जो उस ने कहा था, कि वह हम पर डालेगा, पछताया। अंत में, परमेश्वर ने ऐसा नहीं किया।

रिपोर्टर: आपको जिस विनाश की उम्मीद थी वह नहीं आया तो आपको कैसा महसूस हुआ?

नीनवे के राजा: यह सोचकर कि शहर 40 दिनों में नष्ट हो जाएगा, हम बहुत चिंतित और भयभीत थे। सभी लोग अपने परिवार के

साथ घर के अंदर रहे। हमने उन 40 दिनों में वह सब कुछ किया जो हम कर सकते थे। यह महसूस करने के बाद कि 40 दिनों के बाद भी शहर नष्ट नहीं हुआ है, हमने हमारी जान बचाने के लिए दयालु परमेश्वर को धन्यवाद दिया। तब जाकर हमने राहत की सांस ली। हम शांति से भोजन किया और आराम से सोये। क्या आप जानते हैं, मनुष्य अपने पापों के कारण अपनी शांति खो देता है और भय से भरा जीवन जीता है। परन्तु मैं अपने जीवन में भली-भाँति देख चुका हूँ कि यदि हम परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार कर लें और उनसे मुँह मोड़ लें, तो परमेश्वर हम पर दया करेगा।

रिपोर्टर: मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ, महामहिम! अगर आपकी एक सलाह है, आप हमारे युवाओं के साथ बांटना चाहते हैं, तो वह क्या होगी?

नीनवे के राजा: ठीक है, यदि आप में से कोई अनजाने में पाप का जीवन जी रहा है, तो इसे आज परमेश्वर के सामने स्वीकार करें और इससे दूर हो जाएं। अन्यथा, कम से कम जब आपके माता-पिता/शिक्षक या परमेश्वर का कोई जन आपको चेतावनी दे, तो उनकी बात सुनें और उस पाप से दूर हो जाएं। वो आपको बचाएगा।

वचनों में चेतावनी दी गई है कि, जिसे अक्सर डांटा जाता है, और वह अपनी गर्दन कड़ी कर लेता है, वह अचानक नष्ट हो जाएगा, और वह भी बिना किसी उपाय के। जो डांटे जाने पर भी ध्यान देता है और वचन के अनुसार बुद्धिमानी से चलता है, वह धन्य होगा!

रिपोर्टर: धन्यवाद, महामहिम!



शमगर

पढ़ने के लिए: न्यायी 3:31; 5:6-8

यहोशू के बाद, प्रभु ने ओलीएल, एहूद और शमगर जैसे कई न्यायियों को खड़ा किया। हमने पिछले अंकों में दो न्यायियों के बारे में देखा था। आइए इस महीने तीसरे न्यायी शमगर के बारे में संक्षेप में जानें।

परिचय

शमगर अनथ का पुत्र था। शमगर आध्यात्मिक सूखापन, कमजोर आर्थिक स्थिति और दुश्मनों के डर के बीच एक धर्मी व्यक्ति के रूप में रहता था जो उनके दिनों में व्याप्त था (न्याय.5:5,6)।

उपलब्धि और ताकत.

« जब शमगर न्यायी था, तो उन्होंने बैल की नोक (जब बैल खेत की जुताई कर रहे थे तब गायों को भगाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली छड़ी) से 600 पलिशतियों को मार डाला और इस्राएलियों को बचाया।

« शमगर के पास शायद इसके अलावा कोई और हथियार नहीं था।

« वह संभवतः बैलों का उपयोग करने वाला किसान रहा होगा।

« एक सामान्य बैल की नोक से 600 लोगों का मारना सामान्य बात नहीं है। परमेश्वर की शक्ति के बिना ऐसा करना असंभव है।



सीखा गया सबक

परमेश्वर ने जो चीज़ हमारे हाथों में दी है, उससे वह हमारा सामर्थी उपयोग कर सकता है।

जब हम अपने काम और जिम्मेदारियों के प्रति ईमानदार होते हैं, तो परमेश्वर अपने काम के लिए हमारा सबसे अच्छा उपयोग कर सकते हैं। हम इसे शमगर के जीवन से सीख सकते हैं।

शमगर के नाम का उल्लेख बाइबल में केवल दो स्थानों पर किया गया था। हममें से भी कई लोग किसी गुप्त स्थान पर, बिना किसी पहचान के, कोई काम या ईश्वरीय सेवा कर रहे हैं। परन्तु हमारा नाम भी शमगर की नाई प्रभु की पुस्तक में लिखा जा सकता है।